वर्ष – 10, अंक–2
अंक : अक्टूबर – दिसंबर 2020
UGC-CARE LISTED S.N. - 61

मूल्य-100/-
ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श
डॉ. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

प्रचार-प्रसार
विजय कुमार सिंह

आवरण चित्र
तरुणेश्वर निखिल

ले-आउट
हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/- रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- राकेश मिश्र की कविताओं पर विशेष सामग्री : *डॉ. रमा* 3
- कवि राकेश मिश्र की कविताएँ... : *डॉ. दर्शन पाण्डेय* 8
- राकेश मिश्र की चुनी हुई कविताएँ 11
- गांधीवादी दर्शन और बाणभट्ट... : *प्रो. सत्यकेतु सांकृत* 15
- मीडिया और साहित्य : *सूर्यनाथ सिंह* 17
- कहानी आलोचना के संदर्भ में पाठकीय... : *पंकज शर्मा* 20
- 'विश्व संगीत के गॉड फादर', ... : *डॉ. प्रकाश चन्द्र गिरि* 23
- कहानी विधा के सापेक्ष आलोचना... : *आनंद कुमार सिंह* 26
- राही मासूम रजा और शानी : ... : *डॉ. सुनील कुमार यादव* 28
- कामायनी में सत्यं शिवं और सुंदरं... : *डॉ. शोभा कौर* 31
- बीसवी शताब्दी की कुछ महत्त्वपूर्ण ... : *डॉ. मिथिलेश कुमारी* 34
- मलयज के लिरिकल प्रोज़ का संसार... : *डॉ. राकेश कुमार* 36
- सूचना समाज के दौर में संवदिया : *अनुपम कुमार* 39
- संभावनाओं के आईने में दिल्ली ... : *डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह* 41
- एफएम चैनलों... : *निखिल आनंद गिरि'-डॉ. सर्वेश दत्त त्रिपाठी* 44
- भोजपुरी गीतों में प्रतिरोधी स्वर : *डॉ. सोनी पाण्डेय* 47
- हिंदी उपन्यासों में चित्रित उत्तराखंड... : *जेनब खान* 49
- प्रवासी साहित्य और नीना पॉल... : *डॉ. आसिफ उमर* 52
- 'भाषाई पत्रकारिता और डिजिटल... : *चंदन कुमार भारती* 55
- स्वर से ईश्वर की खोज : *डॉ. चंद्रकांत सिंह* 58
- साहित्यिक विधाओं के अंतर्मिलन... : *आनंद कुमार सिंह* 61
- इंटरनेट के दौर में हिंदी : *डॉ. गंगा सहाय मीणा-डॉ. अनुपमा पांडेय* 64
- आप्रवासन परंपरा, प्रक्रिया और अवधारणा : *नीलमणी भारती* 68
- 'कथेतर गद्य की दृष्टि से रेणु का रिपोर्ताज कर्म' : *निशा गुप्ता* 71
- हिंदी कविता में विश्व शांति का स्वरूप : *डॉ. रामचरण पांडेय* 74
- समकालीन उपन्यासों में ... : *अमृता श्री* 77
- लोकराग-आल्हा : *डॉ. रश्मि शर्मा* 81

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।

कामायनी में सत्यं शिवं और सुंदरं की अवधारणा

डॉ. शोभा कौर

भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्य सत्यं, शिवं और सुंदरं हैं और जो आपस में परस्पर संबद्ध हैं। जो सत्य है वही शिव है, जो शिव है वही सुंदर है। मनुष्य इसलिए मनुष्य है क्योंकि वह मूल्यों से परिचालित है। मूल्य उसकी विशिष्ट संपत्ति है। मूल्य मानवता की कसौटी हैं। जयशंकर प्रसाद भारतीय संस्कृति के व्याख्याता और जीवन-मूल्यों के संरक्षक महाकवि हैं। उनका समस्त साहित्य भारतीय संस्कृति का गहन चिंतन मनन है और कामायनी उनकी सर्वाधिक प्रौढ़ रचना है, जिसमें भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्यों सत्यं, शिवं और सुंदरं का खूबसूरती से वर्णन मिलता है। प्रश्न उठता है कि सत्यं शिवं सुंदरं के विविध आयाम कौन से हैं? क्या सत्यं शिवं सुंदरं मूल्य सापेक्ष हैं अथवा निरपेक्ष? क्या ये मूल्य शाश्वत है या परिवर्तनशील हैं। साथ ही यह प्रश्न भी उठता है कि प्रसाद जी की समसामयिक परिस्थितियों में सत्यं शिवं सुंदरं की क्या भूमिका है? और वर्तमान समय में कामायनी के इन मूल्यों की क्या प्रासंगिकता है?

वास्तव में सत्य के अनेक आयाम हैं। एक अर्थ में जो अविनाशी, चिरंतन और शाश्वत है वही सत्य है। दूसरे अर्थ में इन्द्रियों द्वारा देखना सुनना एवं अनुभव करना सत्य है। तीसरे अर्थ में इस चराचर प्राणी जगत के एक अंश के रूप में होने का अहसास ही सत्य है। सुंदर की सामान्य परिभाषा है जो मन को सुख दे वह सुंदर है परंतु सुख-दुःख संस्कारगत होने के नाते व्यक्तिनिष्ठ हैं। सुंदर के साथ शिवत्व का होना आवश्यक है। अज्ञेय के अनुसार –''सौंदर्यबोध मूलतः बुद्धि व्यापार है, बुद्धि द्वारा ही हम उन तत्वों को पहचानते हैं। मानव का अनुभव ही उन तत्वों की कसौटी है। अनुभव व्यक्तिगत, समाजगत, जातिगत युग-युगांतर संचित होते हैं और अनुभव कोई स्थिर या जड़ पिंड नहीं हैं, वह निरंतर विकासशील हैं। अतः बुद्धि भी विकासशील है, मानव का विवेक भी विकासशील है, इस अर्थ में शाश्वत मूल्यों की बात अनुचित अथवा अर्थहीन हो जाती है। किंतु विकास का सही अर्थ समझना चाहिए। बुद्धि का नए अनुभवों के आधार पर क्रमशः नए स्फुरण और प्रस्फुटन होता है और नए अनुभव पुराने अनुभव को मिटा नहीं देता, उसमें जुड़ कर उसे नई परिपक्वता देता है। यह भी देखना होगा कि क्या सौंदर्य के प्रतिमानों और शिवत्व के प्रतिमानों में कोई अनिवार्य संबंध है? वास्तव में दोनों में विवेक का संबंध अनिवार्य है। कुछ लोगों की धारणा है कि बुद्धि के बढ़ते वैभव के साथ मानव का नैतिक ह्रास हुआ है। किंतु यह पूर्णतः सत्य नहीं है क्योंकि नीति-ज्ञान विवेक स्वयं बुद्धि का वैभव है।''[1] निरी आस्था के सहारे अनैतिकता से बचा जा सकता है पर वह दमन आंतरिक विखंडन का कारण बन सकता है। इस प्रकार सत्यं शिवं और सुंदरं का परस्पर जटिल संबंध है।

कामायनी में प्रसाद जी पौराणिक कथा के माध्यम से अनेक स्तर पर अपना मंतव्य व्यक्त कर रहे हैं। एक ओर यह एक ऐतिहासिक पौराणिक आख्यान है दूसरी तरफ मनु, श्रद्धा और इड़ा; मन, हृदय और बुद्धि के प्रतीक है। मनु मन का प्रतीक है और मन का अर्थ ही यह है कि जो उसे प्राप्त है उस पर वह स्थिर न रहे और अप्राप्त का आकांक्षी मन सिर्फ भटकता और भटकाता है। मन की यह प्रवृत्ति स्त्री या पुरुष किसी की भी हो सकती है। श्रद्धा, प्रेम, आस्था और स्थायित्व का नाम है। इसीलिए कामायनी की श्रद्धा भी पग-पग पर मनु को प्रेम और स्थायित्व का एहसास दिलाती है। इड़ा बुद्धि का प्रतीक है। बुद्धि की दोस्ती मन से ज्यादा होती है, क्योंकि वह स्वयं भी दुविधाग्रस्त है और मन तो पेंडुलम की भाँति श्रद्धा और बुद्धि में डोलता ही रहता है। मन जब श्रद्धा के साथ होता है तो नवसृष्टि होती है और इड़ा के साथ होता है तो संघर्ष, वर्चस्व और एकाधिकार के गुण उभरते हैं। तीनों का संतुलन आनंदवाद है। सत्य श्रद्धा से ही प्राप्त किया जा सकता है वहां द्वैत का काम नहीं है.शिवं मन की इच्छा है, कामना है। सब शिवत्व ही चाहते हैं पर कभी वह सुंदर होता है और कभी कुरूप भी।

प्रसाद जी पर अक्सर आरोप लगते रहे हैं कि उन्होंने अपनी समसामयिक परिस्थितियों को केंद्र में रखकर साहित्य सर्जना नहीं किया। किंतु यह मिथ्या आरोप है। वास्तव में औपनिवेशिक दौर में जब सब साहित्यकारों की दृष्टि वर्तमान की समस्याओं पर केंद्रित थी ऐसे समय में प्रसाद जी आगामी भारत की छिन्न भिन्न मूल्य व्यवस्था के प्रति चिंतित थे, इसीलिए वे भाषा, साहित्य, संस्कृति, इतिहास, दर्शन, राजनीति और वैदिक श्रेष्ठ परंपराओं को संजोते हैं ताकि आने वाले समय में मनुष्य के पास भौतिक उन्नति के साथ अपनी जड़ों से जुड़ने का बोध भी बचा रहे। प्रो. विद्यानिवास मिश्र के अनुसार–''प्रसाद की भारत की पहचान अतीत की गौरववादी